कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–21

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)
(एम. एच. डी.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2023
एम.एच.डी.–21 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रश्न क्रं. 1 अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) कठण लगन की पीर रे, हरि लागी सोई जाने (टेर)
प्रीत करी कछु रीत न जाणी, छोड़ चले अधबीच ॥1
दुख की बेला कोई काम न आवे, सुख के सब हैं मीत ॥2
मींरा के प्रभु गिरधरनागर, आखर जात अहीर ॥3

(ख) थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ, मैं हाजिर (नाजिर)
कद की खड़ी (टेर)
साजनिया दुसमन होय बैठ्या, सब नैं लगे कड़ी।

तुम बिन साजन कोई नहीं है, डिगी नाव मेरी
समंद अड़ी ॥1
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदरा, सूकूँ खड़ी खड़ी।
बान बिरह का लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी ॥2
पत्थर की तो आहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरां में कहिए, सो पर एक घड़ी ॥3

(ग) पगे घूंघरु बाँध मीरां नाची रे। (टेर)
मैं सपने नारायणकी, हो गई आपही दासो रे ॥1
विष का प्याला राणाजी ने भेज्या, पीवत मीरां हाँसी रे ॥2
लोक कहे मीरां भई बावरी, बाप कहे कुलनासी रे ॥3
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणा की दासी रे ॥4

(घ) हरि से गरब किया सोई हारा॥ (टेक)
गरब किया रतनागर सागर, जल खारा कर डारा॥
गरब किया लंकापति रावण, टूक टूक कर डारा ॥1
गरब किया चकवे चकवी ने, रैन विछोह डारा।
गरब किया बन की चिरमी ने, मुख कारा कर डारा ॥2
इन्दर कोप किया वृज ऊपर, नख पर गिरवर धारा।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, जीवन-प्राण हमारा ॥3

2. मीरा के व्यक्तित्व का निर्माण उनके समय की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में होता है, कथन की विवेचना कीजिए। 10

3. गुजरात में मीरा के प्रवास के कारणों का विश्लेषण कीजिए। 10

4. भक्ति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए मीरा की भक्ति की विशेषताएँ बताइए। 10

5. मोरा की काव्यकला की आधारभूमि-स्वच्छंदता की भावना की विवेचना कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) मीरा की विरह-वेदना

(ख) मीरा की काव्यभाषा

(ग) बहिणाबाई

(घ) मुक्ताबाई